यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

फ्रेड्रिक सॉरयू:- फ्रेड्रिक सॉरयू एक फ्रांसीसी कलाकार था, जिसने 1848 ई. में चार चित्रों की एक श्रृंखला बनाई। इसमें उसने अपने सपनों का एक संसार रचा जो उसके शब्दों में जनतान्त्रिक और सामाजिक गणतन्त्रों से मिलकर बना था।

निरंकुशवाद: एक ऐसी सरकार अथवा शासन व्यवस्था जिसकी सत्ता पर किसी प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं होता। इतिहास में ऐसी राजशाही सरकारो को निरंकुश सरकार कहा जाता है। जो अत्यधिक केन्द्रीकृत सैन्य बल पर निर्भर एवं दमनकारी सरकारें होती थी।

कल्पनादर्श (यूटोपिया): यूटोपिया (कल्पनादर्श) एक ऐसे समाज की कल्पना है जो इतना आदर्श है कि उसका साकार होना लगभग असम्भव है।
राष्ट्रवाद को चित्रों के माध्यम से दर्शाने वाला फ्रेड्रिक्क सॉरयू था।

अन्र्स्ट रेनन की समझ के अनुसार एक राष्ट्र की विशेषताएं:-

(1.) एक राष्ट्र लम्बे प्रयासों, त्याग व निष्ठा का चरम बिन्दु होता है।

(2.) राष्ट्र एक बड़ी व्यापक एकता है जिसका अस्तित्व जनमत संग्रह पर निर्भर होता है।

(3.) राष्ट्र में केवल उनके निवासियों को ही सलाह लेने का अधिकार प्राप्त है।

(4.) शौर्य वीरता से मुक्त अतीत, महान पुरुषों के नाम तथा गौरव - यह वह सामाजिक पूँजी है। जिस पर एक राष्ट्रीय विचार आधारित किया गया है।

जनमत संग्रह:- एक प्रत्यक्ष मतदान जिसके माध्यम से एक क्षेत्र के समस्त लोगों को किसी प्रस्ताव को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने के लिए पूछा जाता है।
सन् 1789 ई० में फ्रांस में राजक्रान्ति हुई थी।

फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप हुए परिवर्तनः- 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रान्ति के

BoardStudy

परिणामस्वरूप प्रभुसता राजतंत्र से निकलकर फ्रांसीसी नागरिकों के समूह के हाथों में आ गयी। क्रांति ने स्पष्ट रूप से घोषणा की अब लोगों द्वारा राष्ट्र का गठन होगा एवं वे ही राष्ट्र का भाग्य निर्धारित करेंगे।

फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों द्वारा उठाये गए कदम:-

[1.] पितृभूमि एंव नागरिक जैसे विचारों ने एक संयुक्त समुदाय के विचार पर बल दिया जिसे एक संविधान के अन्तर्गत समान अधिकार प्राप्त थे।

[2] एक नया फ्रांसीसी झंडा तिरंगा चुना गया जिसने पहले के राष्ट्र ध्वज का स्थान ले लिया।

[3.] आन्तरिक आयात-निर्यात शुल्क समाप्त कर दिय गये।

[4.] तौलने एंव नापने के लिय एक तरह की व्यवस्था लागू की गयी।

[5.] क्षेत्रीय बोलियों के स्थान पर पेरिस की फ्रेंच भाषा ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित हुई।

यूरोप पर फ्रांसीसी क्रान्ति का प्रभाव:-

- [1.] फ्रांस की क्रान्ति ने राष्ट्रवाद के बीज बो दिये, जिससे यूरोप में राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना हुई।
- [2.] फ्रांस की क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व को लोकतंत्तीय सिद्धान्त प्रदान किया।
- [3.] फ्रांस ने यूरोप के अन्य लोगों को राष्ट्रों के गठन में सहायता प्रदान की।
- [4.] फ्रांसीसी सेनाएँ राष्ट्रवाद के विचार को विदेशों में भी ले गयी।

नेपोलियन संहिताः इस संहिता को सन् 1804 ई० में लागू किया गया। इस संहिता ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया। इसने न केवल न्याय के समक्ष समानता स्थापित की बल्कि सम्पति के अधिकार को भी सुरक्षित बनाया।

1815 की वियना संधि:- नेपोलियन की पराजय के पश्चात यूरोपीय शक्तियों ने वियना

BoardStudy

की संधि की। इस संधि के उद्देश्य नेपोलियाई युद्धों द्वारा लाये गये परिवर्तनों को समाप्त करना तथा यूरोप में एक नई रढिवादी व्यवस्था स्थापित करना था।

वियना संधि की प्रमुख विशेषताएँ:-

(1.) फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान हटाए गए बूर्बो राजवंश को सता में बहाल किया गया किया गया तथा फ्रांस को नेपोलियन से हुय युद्धों के दौरान प्राप्त विभिन्न क्षेत्रों को लौटाना पड़ा।

(2.) भविष्य में फ्रांस द्वारा सम्भावित विस्तार को रोकने के लिए फ्रांस की सीमाओं पर कई नये राज्यों की स्थापना की गई। इस प्रकार उत्तर में नीदरलैण्ड का राज्य स्थापित किया गया जिसमें बेल्जियम सम्मिलित था। और दक्षिण में पीडमॉण्ट में जेनोआ को सम्मिलित कर दिया गया।

(3.) प्रशा को उसकी पश्चिमी सीमाओं पर महत्वपूर्ण नये क्षेत्र दिये गये जबकि ऑस्ट्रिया को उतरी इटली का नियन्त्रण सौंपा गया।

(4.) नेपोलियन द्वारा स्थापित 39 राज्यों के जर्मन महासंघ को बरकरार रखा गया। ड्यूक मैटरनिख ने 1815 ई० में आयोजित वियना शांति संधि की अध्यक्षता की थी।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ:-

1797:- नेपोलियन का इटली पर हमला, नेपोलियाई युद्धों की शुरुआत

1814-1815:- नेपोलियन का पतन, वियना शांति संधि

1821:- यूनानी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष प्रारंभ

1848:- फ्रांस में क्रांति

1859-1870:- इटली का एकीकरण

1866-1871:- जर्मनी का एकीकरण

यूरोप महाद्वीप के शक्तिशाली कुलीन वर्ग की विशेषताएँ:-

BoardStudy

(1.) जीवन जीने की एक समान शैली:- सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से कुलिन वर्ग यूरोप महाद्वीप का सबसे प्रभुत्वशाली वर्ग था। इन लोगों की जीवन जीने की एक समान शैली थी। इस साझी जीवन शैली से इस वर्ग के सदस्य एक दूसरे से जुड़े थे।

(2.) भू-स्वामित्व:- ये लोग ग्रामीण क्षेत्रों में भूमी के मालिक थे। इनके पास बड़ी-बड़ी जागीरें थी तथा शहरी क्षेत्रों में विशाल भवनों के स्वामी थे।

(3) फ्रेंच भाषा का प्रयोग:- कुलीन वर्ग राजनीतिक कार्यों के लिए एवं उच्च वर्गो के बीच वे फ्रेंच भाषा का प्रयोग करते थे।

(4.) आपस में वैवाहिक सम्बन्ध:- कुलीन वर्गो के परिवार वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से आपस में जुड़े होते हैं।

(5.) छोटा समूह:- यूरोप महाद्वीप में कुलीन वर्ग संख्या की दृष्टि से एक छोटा समूह था।

यूरोप में मध्यम वर्ग के उदय के कारण:-

- पश्चिमी एवं मध्य यूरोप के विभिन्न भागों में औद्योगिक उत्पादन और व्यापार में वृद्धि से शहरों का विकास तथा वाणिज्यिक वर्गो का उदय हुआ। इस वर्ग का अस्तित्व बाजार के उत्पादन पर निर्भर था।
- इंग्लैण्ड में 18वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में औद्योगीकरण प्रारम्भ हुआ जबकि फ्रांस व जर्मनी के राज्यों के कुछ हिस्सों में यह 19 वीं शताब्दी के दौरान ही हुआ।
- मध्य और पूर्वी यूरोप के इन समूहों का आकार 19 वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों तक छोरा ही था। यह वर्ग शिक्षित, धन सम्पन्न उदारवादी था।
- कुलिन विशेषाधिकारों की समाप्ति के पश्चात् शिक्षित और उदारवादी मध्य वर्गो के बीच ही राष्ट्रीय एकता के विचार लोकप्रिय हुए।

ज्युसेपे मेत्सिनी:- ज्यूसेये मेत्सिनी इटली का एक युवा क्रान्तिकारी था। इसका जन्म सन् 1807 को जेनोआ में हुआ था। देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर वह कार्बोनारी

BoardStudy

के गुप्त संगठन का सदस्य बन गया। 24 वर्ष की आयु में लिगुरिया में क्रान्ति करने के कारण उसे बहिष्कृत कर दिया गया। मेत्सिनी ने मार्सेई में यंग इटली एवं बर्न में "यंग यूरोप" नामक भूमिगत संगठनों की स्थापना की।

काऊंट कैमिलों द काबूर:-

काउंट कैमिलो द काबूर इटली के सार्डीनिया पोडमान्ट राज्य का प्रमुख मंत्री था। वह न तो एक क्रांतिकारी था एवं न ही जनतंत्र में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया।

मारीआन:- मारीआन फ्रांस राष्ट्र का नारी का प्रतिक रूपक था। फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान कलाकारी ने स्वतन्त्रता, न्याय एव गणतन्त्र जैसे विचारों को व्यक्त करने के लिए नारी रूपकों का प्रयोग किया। फ्रांस में इसे लोकप्रिय ईसाई नाम " मारीआन" दिया गया। जिसने जन-राष्ट्र के विचारों को रेखाकिंत किया।
पोलेनेस और माजुरका पोलैण्ड के लोक नृत्य है।

जर्मेनिया:- जर्मेनिया जर्मन राष्ट्र का नारीरूपक प्रतीक था। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पतों का मुकुट पहनती है। क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतिक है। जर्मेनिया की तलवार पर जर्मन तलवार जर्मन साम्राज्य की रक्षा करती है।

जर्मनी और इटली का निर्माणः

जर्मनी की राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया:-

(1.) सम्पूर्ण जर्मनी के लिए एक नवीन संविधान के निर्माण के लिए 18 मई 1848 को फ्रैंकफर्ट संसद के 831 निर्वाचित सदस्यों की एक बैठक हुई लेकिन यह बैठक असफल रही।

(2.) 1848 ई० में महासंघ के विभिन्न क्षेत्तों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया।

BoardStudy

(3.) इसके पश्चात प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आन्दोलन का नेतृत्व किया।

(4.) बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया, डेनमार्क व फ्रांस के विरूद्ध युद्ध कर विजय प्राप्त की।

इटली की राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया:-

(1.) इटली अनेक वंशानगत राज्यों एव बहुराष्ट्रीय हैब्सबर्ग साम्राज्य में बिखरा हुआ था।

(2.) उन्नीसवी शताब्दी के मध्य इटली सात राज्यों में बताँ हुआ था।

(3.) इतालवी भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र की भाषा नहीं थी। अभी तक उसके विविध क्षेत्रीय व स्थानीय रूप प्रचलन में थे।

1871 ई० में जर्मनी को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया गया।

ग्रेट ब्रिटेन के आदर्श राष्ट्र राज्य बनने के कारण:-

[1.] अठारहवीं सदी से पूर्व ब्रिटिश राष्ट्र का न होना:- अठारहवीं सदी से पूर्व ब्रिटेन राष्ट्र नहीं था। ब्रिटिश द्वीप समूह में रहने वाले लोगों - अंग्रेज, वेल्स, स्कॉट, आयरिश की मुख्य पहचान नृजातीय थी। इन समस्त जातीय समूहों की अपनी सांस्कृतिक व राजनीतिक परम्पराये थी।

[2.] आंग्ल संसद द्वारा अपनी सर्वोच्चता स्थापित करना:- एक लम्बे संघर्ष के पश्चात आंग्ल संसद ने 1688 ई० से राजतन्त्र से सत्ता छीन ली तथा अपनी सर्वोच्य सता स्थापित कर ली। इस संसद के माध्यम से एक राष्ट्र राज्य का निर्माण हुआ। जिसके केन्द्र में इग्लैण्ड था।

[3.] यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना:- 1707 ई० में इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के मध्य एक्ट ऑफ यूनियन के द्वारा यूनाइटेड किंग्डम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन का गठन हुआ। इस एक्ट के माध्यम से इंग्लैण्ड को स्कॉटलैण्ड पर आधा प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार मिल गया।

[4.] आयरलैण्ड को यूनाइटेड किंग्डम में सम्मिलित करना:- 1801 ई में आयरलैण्ड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंग्डम में सम्मिलित कर लिया गया। इस प्रकार एक नवीन ब्रिटिश राष्ट्र का निर्माण हुआ।

BoardStudy

गॉड सेव अवर नोबल किंग ग्रेट ब्रिटेन का राष्ट्रीय गान है।

उदारवाद:- उदारवाद यानि Liberalism शब्द लैटिन भाषा के मूल liber पर आधारित है जिसका अर्थ है "आजाद" यूरोप में 19वीं शताब्दी में मध्य वर्ग के लोगों एंव बुद्धिजीवियों द्वारा प्रोत्साहित वह विचारधारा, जिसमें उनकों राजनीतिक एंव आर्थिक क्षेत्र में अधिकाधिक अवसर प्राप्त हुए तथा उनकी हिस्सेदारी को महत्व प्रदान किया गया, उदारवाद कहलाया।

उदारवादियों की 1848 की क्रान्ति का अर्थ था- राजतंत्र का अन्त तथा गणतंत्र की स्थापना।

उदारवादियों ने निम्नलिखित राजनैतिक, सामाजिक. एंव आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया।

- सन् 1848 में खाद्य सामग्री का अभाव एंव बेरोजगारी की बढ़ती हुई समस्या के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। इस संकट के समाधान के लिए उदारवादियों के द्वारा क्रान्ति एंव प्रदर्शन पर बल दिया गया।
- सार्वजनिक मताधिकार पर आधारित जनप्रतिनिधि सभाओं के निर्माण की माँग बढ़ने लगी।
- जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, ऑस्ट्रिया व हंगरी आदि के उदारवादी मध्यम वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने संविधानवाद की माँग को राष्ट्रीय एकीकरण की माँग से जोड़ दिया।
- भू- दासत्व एंव बंधुआ मजदूरी को समाप्त करने की माँग उदारवादी नेताओं द्वारा की जाने लगी।

रूमानीवाद:- यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में सांस्कृतिक जुड़ाव को रूमानीवाद नाम दिया गया।

रुमानीवाद के उदाहण:-

BoardStudy

(1.) प्रथम उदाहरण - लोक संस्कृति:- प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक योहना गॉटफ्रीड ने दावा किया कि रूमानी जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित थी। उसने लोक संगीत, लोक काव्य एंव लोक नृत्यों के माध्यम से जर्मन राष्ट्र की भावना को प्रचारित-प्रसारित किया।

(2.) द्वितीय उदाहरण-भाषा:- राष्ट्रवाद के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसका उदाहरण पोलैण्ड है, पोलैण्ड में राष्ट्रवाद के विकास में भाषा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पोलैण्ड के रूस के कब्जे वाले हिस्सों में पोलिश भाषा को विद्यालयों से बलपूर्वक हटाकर रूसी भाषा को जबरदस्ती लाद दिया गया। जनपादरियों और बिशपों ने रूसी बोलने से इन्कार कर दिया तो उन्हें सजा दी गयी।

(iii) तृतीय उदाहरण - संगीत:- पोलैण्ड में परतन्त्रता की स्थिति में संगीत के द्वारा ही राष्ट्रीय भावना जाग्रत रखी गयी। कैरोल कुर्पिस्की नामक एक पोलिश नागरिक था। जिसने राष्ट्रीय संघर्ष का अपने ऑपेरा व संगीत से गुणगान किया। तथा पोलेनेस व माजुरका जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीक में बदल दिया गया।
1832 ई. में कुस्तुनतुनिया की संधि हुई। कुस्तुनतुनिया की संधि ने यूनान को एक स्वतन्त्र राष्ट्र की मान्यता दी।

रूढ़िवाद:- रूढ़िवाद एक ऐसा राजनीतिक दर्शन हैं जो परम्परा द्वारा स्थापित संस्थाओं एवं रीति रिवाजों पर बल देता है तथा त्वरित परिवर्तन के स्थान पर धीमे परिवर्तन में विश्वास करता है।
जब फ्रांस छींकता है तो बाकी यूरोप की सर्दी-जुकाम हो जाता है। यह कथन मैटरनिख का हैं।

BoardStudy